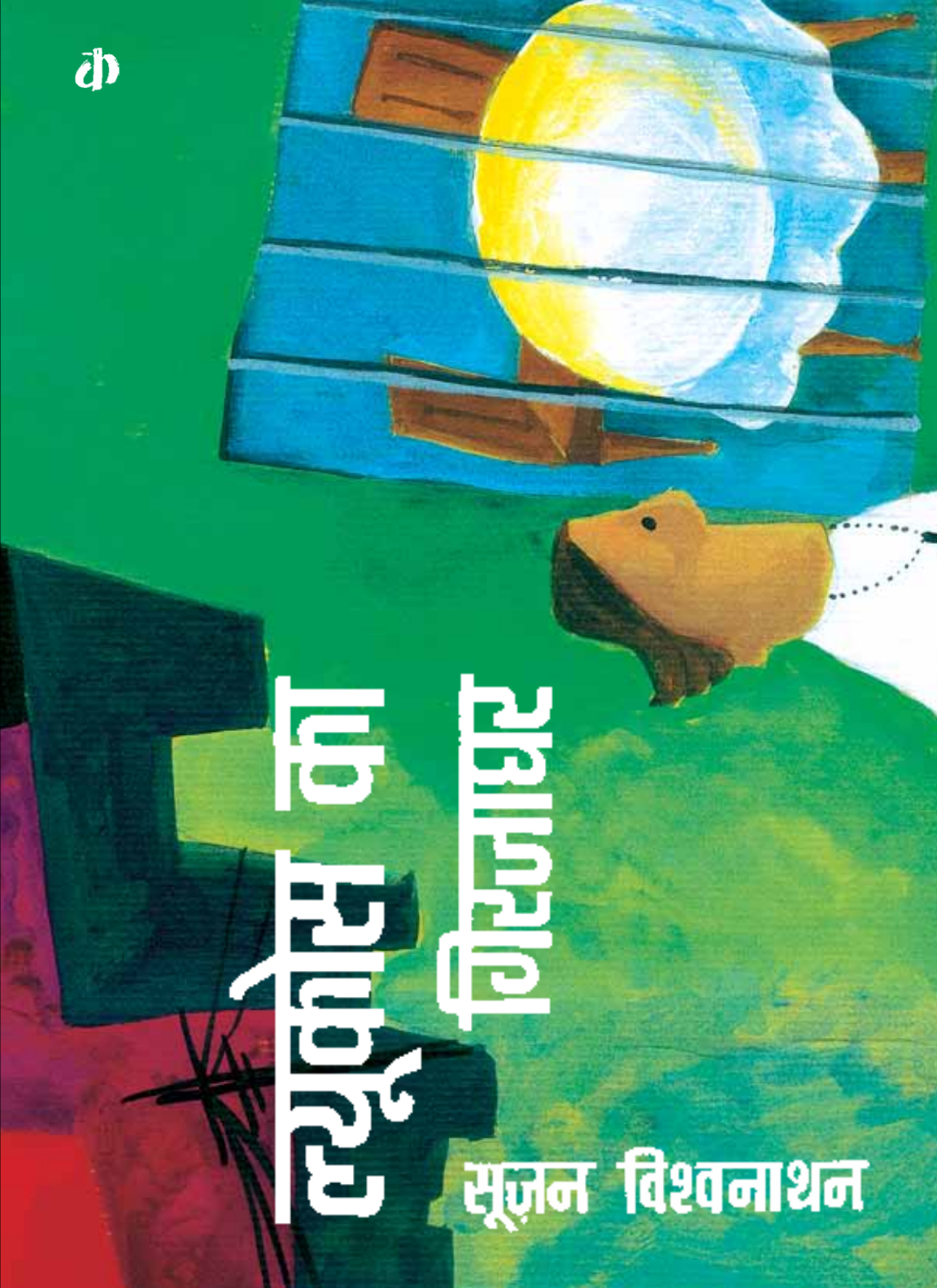

ल्यूकोस का गिरजाघर

सूज़न विश्वनाथन

केरल भारत का एकमात्र राज्य है जहाँ साक्षरता दर 100 प्रतिशत है।

ल्यूकोस का गिरजाघर

लेखिका:

सूजन विश्वनाथन

(की अंग्रेजी कहानी पर आधारित)

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-14-9
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

मेरी माँ ने मुझे एक छोटे अंधेरे कमरे में जना था। दाई के चेहरे पर मस्से और हाथ गठिया से मुड़े, लेकिन सधे हुए थे। मुझे और मेरी माँ को जोड़ने वाली नाल उसने ही एक चपटे, भारी और बिना हत्थेवाले चाकू से काटी थी।

उस चाकू को मैं अक्सर दीवार पर टंगे देखकर डर जाता था।

मैंने उसे मुर्गियों के सिर काटते भी देखा था, मेहमानों के आने पर, या क्रिसमस पर – बिना

गठियाः एक रोग जिसमें हड्डियाँ अकड़ जाती हैं।

भावुकता के, धड़ाधड़ काटते जाना, चाहे फिर वो अंबियाँ हों या केले या कटहल।

बचपन में, मैंने देखा था इसे उबलते पानी में डुबोकर जब माँ के पास यह ले जाया गया। जब उसने दूसरे बेटे को जन्म दिया। ताकि दाई उन दोनों को भी काटकर अलग कर सके।

इस चाकू के ऊपर, टंगे थे मछली पकड़ने के बाँस और वह डाँग जिससे माँ हमारे लिए इमली के गिटारे और अमरूद, पेड़ से गिराती थीं, और कच्ची अंबियाँ भी, जो वे खाना पकाने में इस्तेमाल करती थीं।

मैं घर का पहला बेटा था और उन्होंने मेरा नाम मेरे दादा जी के नाम पर रखा, ल्यूकोस। माँ मुझे अक्सर बताया करती थी कि जब मैं पैदा हुआ तो वे डर गईं थीं, क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने मेरे दादा ही को जन्म दे दिया है।

अंबियाँ: कच्चा आम

२

माँ कहती थीं, पैदा होते ही मैंने उन्हें ऐसे देखा जैसे कि मैं उन्हें हमेशा से जानता था।

मुझे लगता है, उनका दादा के बारे में इतना सोचना, और मेरी शक्ल का उनसे इतनी मिलना, ही दो कारण थे जिनसे हम दोनों के बीच एक अदृश्य दूरी हमेशा बनी रहे। वे मुझसे सदा ही प्यार से पेश आती, पर हमेशा ही उस प्यार में आदर छुपा-मिला होता था। उन्होंने मुझे कभी सीने से नहीं लगाया, जैसे वे मेरे भाई बेहनान को लगाती थीं।

तो हैरानी की बात नहीं थी कि, जब मैंने धार्मिक पढ़ाई पूरी करने के बाद दीक्षा ली और अपने दादा और उनके पिता, की तरह पादरी बन गया, वे मुझे "अच्चन" कहकर पुकारने लगे।

और यह बेहद स्वभाविक लगा कि मैं, ल्यूकोस, एक बार फिर अपनी माँ से काटकर अलग कर दिया जाऊँ। इस बार एक चपटे रसोई के चाकू से नहीं, पर माँ के आदर से, जिसने उस चाकू-सा ही काम किया।

अच्चनः पिताजी

3

मैं पम्बा नदी के किनारे बड़ा हुआ। नदी चौड़ी और शांत थी। उसका चेहरा सुबह से शाम बदलता रहता। जब किलकिला उस पर से उड़ाने भरते, ऐसा लगता मानो उनके पंख आसमान, रोशनी और पानी के रंगों को समेट रहे हों।

दूसरी ओर, धान के हरे खेत थे। नदी किनारे पतले लम्बे लहराते गन्ने थे, जो पानी में डरावनी परछाइयाँ बनाते थे।

हमारे किनारे पर कुछ बड़ी-बड़ी, चट्टाने थीं, और वह खूबसूरत जंगली पौधा, जिसे हम थोट्टा-वडी कहते हैं। गर्मी की आलस भरी दोपहर, मैं नीलकण्ठ देखते और माँ के बुलाने का इंतज़ार करते हुए बिताया करता था।

मैं नहीं जानता कि मुझे भगवान की आराधना का बुलावा कब आया। शायद उस दिन जब मैंने सूर्य को अपने अन्दर जलते महसूस किया।

तब जब मेरा सिर एक ठंडी जबरदस्त शक्ति के अहसास से भरा गया था।

मैं इस अहसास में डूबा, किनारे लेटा काँपता रहा और मुझे लगा कि ईश्वरीय शक्ति, ठंडी और क्रूर है।

आख़िर जब मैं उठा और घर के अंदर गया तो मुझे, वह अंधेरा आरामदेह नहीं बल्कि पराया-सा लगा।

किलकिलाः किंगफिशर (एक पक्षी)
थोट्टा वड़ीः छुई-मुई

मुझे लगा कि सूरज सदा से ही मेरे खून में है। मुझमें और मुझ पर रोशनी ही रोशनी थी, लेकिन फिर भी एक भयानक ठंडेपन का अहसास था, जैसे मैं अब कभी भी मनुष्य लोक से संबंध नहीं रख पाऊँगा और आम ज़िंदगी में कभी वापिस नहीं पाऊँगा।

माँ बोली, "बेहतर होगा कि तुम कुछ खा लो। पूरी दोपहर धूप में नहीं लेटना चाहिए। तुम्हें घर के अंदर आराम करना चाहिए।"

हमने चुप्पी में खाना खाया।

पिताजी कभी कुछ नहीं कहते थे। हलाँकि माँ के प्रति वे बेहद नम्र थे और उनके लिए दिल में प्यार भरा था, फिर भी वे इस तरह रोज़मर्रा के काम करते थे, जैसे कि भाषा जैसी कोई चीज़ ही न हो।

मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वे खेत, व्यापार और मज़दूर,

---

आमः साधारण
रोज़मर्राः दैनिक, प्रतिदिन

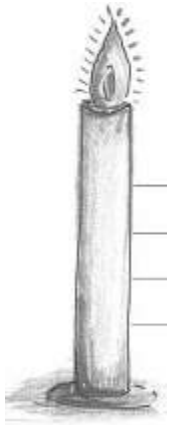

सबको अकेले ही संभालते थे। हम सब बहुत छोटे थे और माँ से वे किसी भी विषय पर बात नहीं कर सकते थे।

जो खाना माँ बनाती वे खाते, और लगता था कि उन्हें पसंद भी आता था। जब हम सभी शाम को इकट्ठे होते, तो एक स्वर में वे प्रार्थनाएँ गाते। उन्हें लगता था कि दादाजी अभी भी जीवित हैं।

उस शाम, जब हम खाना खा चुके, फादर ने मुझे बाइबल पढ़ने को दी और मुझे उसमें एक पद मिला, "तुम मुझे जन्म से पहले से नहीं जानते हो।"

शायद उस पल मुझे मालूम हुआ, कि मैं ईश्वर की सेवा करूँगा और वह भी उन्हीं के घर में।

५

एक गिरजाघर था, जहाँ मेरे दादा जी ने भी प्रभु की सेवा की थी। और वहाँ मेरा हक भी था। यह तय हुआ कि मैं वहाँ अपने चाचा की निगरानी में रहूँगा, जो अब वहाँ ईसाई धर्म के सभी अनुष्ठान करते थे। बिशप - आन्द्रेयोस सबके आदरणीय थे। और मैं केवल नौ वर्ष तक था।

मैंने उस दिन के बारे में किसी को नहीं बताया था, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से पिताजी समझ गए कि मैं खेती नहीं करूंगा।

बिशपः बड़े पादरी

"मैं तुम्हें लेखा-जोखा और हिसाब-किताब सिखाने की सोच रहा था। पर अब मैं सोचता हूँ, कि जब बेहनान बड़ा हो जाएगा, तो यह सब वो कर लेगा। तुम अपनी प्रार्थनाएँ ठीक से याद करो।"

तो मुझे अकेला छोड़ दिया गया, नदी किनारे, सपने देखता। केवल शाम होने पर ही मैं घर आता। और फिर जब पूरा परिवार एवं नौकर पुरानी चटाइयों पर, घुटनों के बल होते, तो मैं एक प्रार्थना कहता।

जब मैं पिताजी के बड़े भाई मालपन आन्द्रेयोस के पास पढ़ने गया, तब मैं तेरह साल का था। माँ ने मेरे लिए सफेद चोगा-सा बना दिया- पुजारी के कोप जैसा तोनहीं, पर काफी कुछ मिलता जुलता था। उन्होंने काले चमकदार मख़मल की एक छोटी गोल टोपी भी सिला दी।

वह इतनी नर्म और अरामदेह

कोपः एक तरह का चोगा जो पादरी अपने कपड़ों के ऊपर पहनते हैं

थी और मेरे सिर पर एकदम सही बैठती थी। जब मैं उसे रात को उतारता, तो मुझे ख़ाली-खाली और अजीब लगता।

माँ नहीं रोईं, क्योंकि उनके मुताबिक, उन्हें इस पल के बारे में, मेरे पैदा होने के समय से ही पता था। पिताजी ने एक पल को मेरा हाथ पकड़ा - और उनका वह छोटा सा भाव मुझे अंदर तक हिला गया। पिताजी ने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। उनके हाथ एकदम सूखे थे, लगभग निर्जीव, और उनकी पतली

उंगलियों पर गिरते मेरे आँसुओं से हम दोनों ही शर्मिंदा हो उठे थे। बेहनान कहीं दिखाई न दे रहा था, जबकि दूर नारियल के झुरमुटों से उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी।

अपने मामा के साथ निकलते हुए मैंने नदी की ओर देखा। मैं अपने मामा को माथप्पी अच्चन बुलाता था। बादलों भरा दिन था, नदी काली लग रही थी और गन्ने पानी के सामने काँप रहे थे। घर भी ऐसे लग रहा था जैसे उसने खुद को मेरे लिए बंद

झुरमुटः पेड़-पौधों का झुंड

कर लिया हो। छत से पतली बेलों की तरह नीचे की ओर आती लकड़ी की जाली भी मुझे न देख, अंदर की ओर देख रही थी। दरवाज़े पर लगा पुराना फारस का क्रॉस, मोमबत्ती की धीमी रोशनी अनमन ढंग से चमक रहा था।

इस क्रास में खुदाई की गई थी और बचपन में मुझे उसमें उंगलियाँ डालने में मज़ा आता था। फिर एक दिन वे उसमें ही फँस गईं। माँ ने मुझे पीटा था और बेहनान तो खुशी से अपने सिर पर ही खड़ा हो गया था!

आम के पेड़ की परछाइयाँ दीवार पर गिर रही थीं। धूप थी, सुनहरी भी मद्धम भी; एक तूफान आने को था।

माथप्पी अच्चन ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मालपन आन्द्रेयोस के घर ले गए। माथप्पी अच्चन एक लम्बे और सख़्त आदमी थे और मुझे उनके साथ-साथ चलना मुश्किल लगता था।

मद्धमः हल्की/हल्का

5

उनमें मुझे नर्मदिली और रौब दोनों दिखाई देते थे। मैं उन्हें प्यार करता था।

"खाना ठीक से खाना। आन्द्रेयोस किताबों में इतना खो जाता है कि भूल जाता है।"

"क्या आप अक्सर मुझसे मिलने आएंगे?"

"ल्यूकोस, तुम जानते हो मेरे काम में मुझे ख़ाली वक्त कम ही मिलता है। मैं लैंट के बाद आऊँगा।"

"क्या आप मेरे लिए अपने बगीचे के आम लाएंगे?"

लैंटः 40 दिन का समय, जो उस समय का सूचक है जोकि यीशू ने रेगिस्तान में बिताए, शैतानों से जूझते हुए

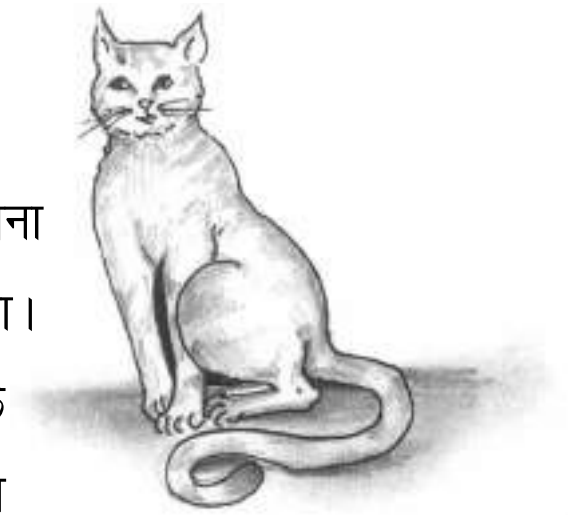

"एक बिल्ली भी लाना और शहतूत," मैंने कहा।

जब हम मालपान के घर पहुँचे तो वहाँ ताला लगा था। मैंने खिड़की से झाँका। सीलनभरे अँधेरे कमरे में एक मेज़ थी, जिस पर सफेद मेज़पोश बिछा था।

आन्द्रेयोस अच्चन! कई बार पुकारने के बाद माथप्पी अच्चन गेट के पास बनी झोंपड़ी की ओर गए। एक औरत बाहर आई। फिर हमे देखकर वापस अंदर चली गई।

जब हम इंतज़ार कर रहे थे, एक आदमी बाहर आया, सिर पर छोटे अधपके घुंघराले बाल; पतला, झुका हुआ शरीर।

"कौन है?"

"मैं ल्यूकोस अच्चन के पोते के साथ आया हूँ।"

"तो ये है ओन्द्रेयोस अच्चन के भाई का बेटा।" कितना लम्बा हो गया है। अच्चन तो यहाँ नहीं है। तुम मुझे जानते हो- मैं कब्रों की देखरेख करता हूँ। तुम चाहो तो गिरजाघर में बैठ सकते हो। खुला है।

आन्द्रेयोस अच्चन अगले गाँव एक शादी में गए हैं। रात होने से पहले लौट आएंगे।

माथप्पी अच्चन ने मेरा हाथ पकड़ा, और

माँ की दी हुई कपड़ों की गठरी के साथ हम गिरजाघर में चले गए। यह गिरजाघर मेरे दादा जी ने 1880 में बनवाया था। दरवाज़े के ऊपर बने क्रॉस के नीचे मलयालम वर्ष 1055 लिखा था।

रोशनी फिर बदल गई थी। जूते बाहर उतारकर हम पीछे बैठे, सरकंडे की चटाई पर। मैंने ईश्वर का सिंहासन देखा, जहाँ मैं उनकी सेवा करना सीखने वाला था, और मेरे अंदर एक गहरा खौफ़ भर गया।

मुझे लगा कि मैं मर जाऊँगा। यहाँ क्या रहस्य छिपे थे? मालपन भी मेरे लिए अजनबी थे। एक भिक्षु जैसे खुद पर कड़ा अनुशासन,

विद्वान बूढ़े, जैसे कोई संत हों।

डूबते सूर्य की किरणें पश्चिमी दरवाज़े से छन कर अंदर आ रही थीं। चारो ओर उजाला फैल गया। मैं उस श्वेत रोशनी के सिवा और कुछ नहीं देख पा रहा था। मैंने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं सका।

मैंने चालीस बार ईश्वर के सामने दंडवत किया। मेरे हाथों की हड्डियाँ धूल से काली हो गईं।

उस पल मैं समझ गया। इस सब के अंत में, छत में लगे लट्ठों से लटकता लैम्प रोशन किया

खौफ़: डर
श्वेत: सफ़ेद

जाएगा और एक दिन मैं यहाँ ईसा मसीह के त्याग का उत्सव मनाऊँगा।

जब मेरी प्रार्थनाएँ खत्म हो गई तब माथप्पी अच्चन ने मेरी ओर देखा और कहा, मेरा पानी का सफर है। काफी दूर जाना है। मेरा माझी बेचैन हो रहा होगा। यहीं रहो, तुम सुरक्षित हो। आन्द्रेयोस अच्चन जानते हैं कि तुम उनके पास आने वाले हो। मैं अब चलता हूँ।

उन्होंने मेरा माथा चूमा, और मुझे कंधों से पकड़े रहे। मैंने कुछ नहीं कहा।

जब आन्द्रेयोस अच्चन वापिस आए, वे थके हुए और कमज़ोर लग रहे थे। उन्होंने मुझे हाथ

में डोलते लैम्प से बनी झूलती और झिलमिलाती परछाइयाँ देखते देखा, और बिना कुछ कहे मेरे कंधे पर हाथ रख मुझे रास्ता दिखाया। मुझे लगता है कि उन्हें भी यह अहसास था कि परिवार में पुजारियों की परम्परा कायम रहेगी – और यह ज़रूरी भी था, चाहे दादा जी की याद में ही सही – पर उनका चेहरा सख़्त था।

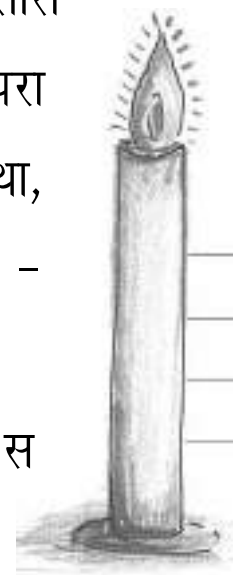

जब आंद्रियास अच्चन वापिस आए, वे थके और कमज़ोर लग रहे थे। उन्होंने मुझे कंधे पर हाथ रखकर संकेत किया। उनका चेहरा सख़्त था। शायद उन्हें भी

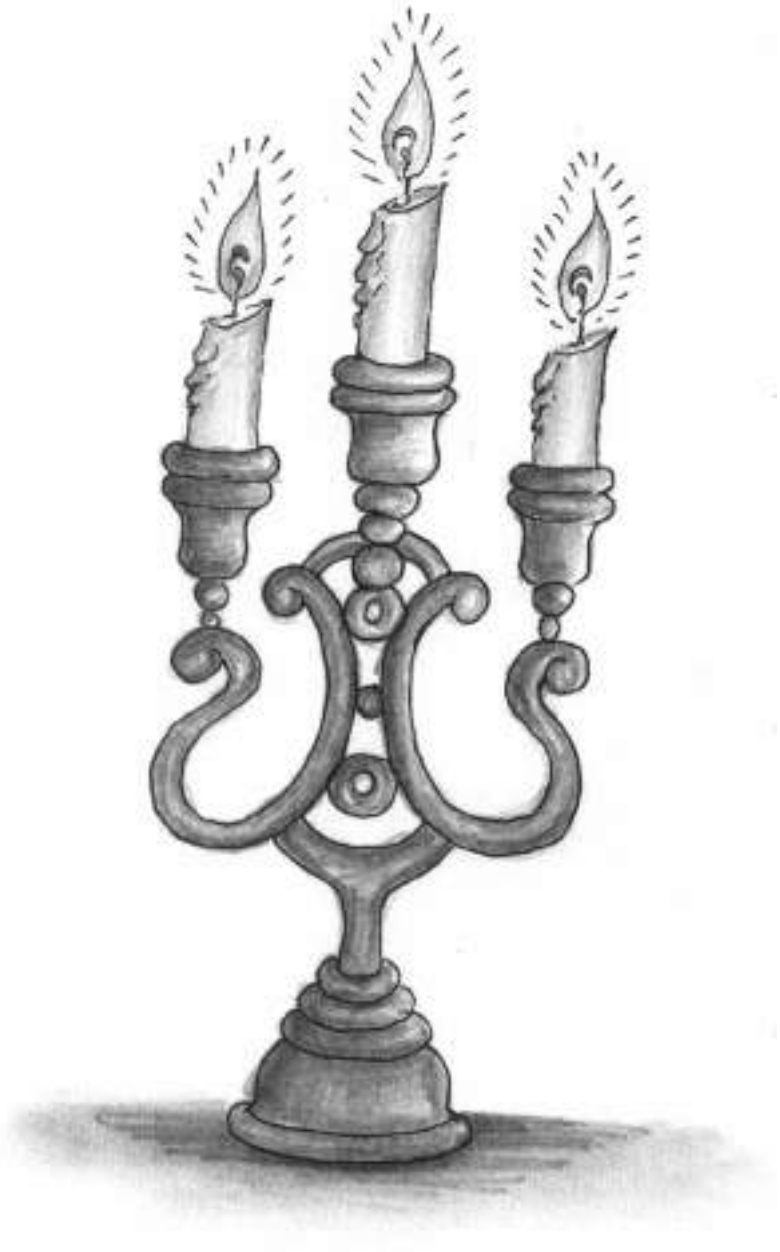

6

लगता था कि दादाजी और पादरियों का वंश चलाने की ख़ातिर यह ज़रूरी था। शायद उन्हें इस बात का बुरा लग रहा था कि अब उनकी ज़िंदगी पहले जैसी नहीं रहेगी और एक लड़का अब उनके साथ रहेगा।

चुप्पी में ही उन्होंने मुझे मेरा कमरा दिखाया। एक छोटा सा कमरा, जिसमें सिर्फ एक खिड़की थी और एक बेहद तंग बिस्तरा।

“हम कल बात करेंगे।”

“फादर, मुझे खुशी है कि मैं आपके साथ हूँ।”

"देखेंगे। क्या तुम अपनी प्रार्थनाओं की किताबें लाए हो?"

"मुझे सब जुबानी याद हैं।"

"मैं कल सुनूँगा।"

मेरा बिस्तर सख्त और तंग था लेकिन मुझे नींद आ गई।

गिरजेघर की घंटियों की आवाज़ से सुबह मेरी आँख खुली। अभी भोर होने को थी। मैं। नदी की ओर भागा और नहाया, परिन्दों की चहचहाहट के बीच।

जब मैं अपने अंकल, मालपन के छोटे से अंधेरे घर में गया, मैंने देखा कि खाने को कुछ भी नहीं था।

माँ की बनाई कड़वी काली कॉफी मुझे बेहद याद आ रही थी।

एक पल के लिए मैंने सोचा, "बूढ़े पुजारी ने अभी तक मुझसे बात नहीं की है। मैं अभी भी वापिस जा सकता हूँ।"

मैंने पम्बा के ऊपर बना वह छोटा-सा पुल देखा, जो दोनों गाँवों को अलग करता था। मैंने खुद को उस पर भागते देखा, फिर कभी भी उस गिरजाघर में न लौटने के लिए, जो मलयालम युग के वर्ष 1055 में बना था।

तंगः संकरा
टैपियोकाः कसावा

मैं शादी कर लूँगा, पिताजी मेरे लिए एक घर बना देंगे, मैं धान के खेतों, टैपियोका व काली मिर्च की ढलानों की निगरानी करूँगा जो मेरे थे।

और फिर मुझे लोबान की गंध आई। वह कड़वी और खुशबूदार थी, और गिरजाघर की खिड़कियों से आ रही थी। पुजारी की आवाज़ गूंज रही थी ... कुरी एलैसैन, ईश्वर दया करें।

और मैं उनके साथ होने को, उनके पास चल दिया।

वे सुनहरी लबादे पहने हुए थे और पैरों में लाल वैलवैट के जूते थे।

गिरजाघर खाली था, जब मैं हर सीढ़ी और ईश्वर के सिंहासन के हर खम्भे को चूमता जा रहा था। उन्होंने क्रास से मुझे आशीर्वाद दिया।

और उस पल मैं उन जैसा बन गया, एक सेवक ईश्वर के दर्शनों को आतुर। उस पल, न गिरजाघर, न ही पुजारी और न ही यह संसार कोई महत्व रखता था, और यही सच था।

मेरे सवालों का जवाब दो

ढूढो, पूछो, पता लगाओ,
लिखो, सीखो और बतलाओ
दोस्तों को भी बुलाओ,
धर्म गुरूओं की पहचान कराओ।

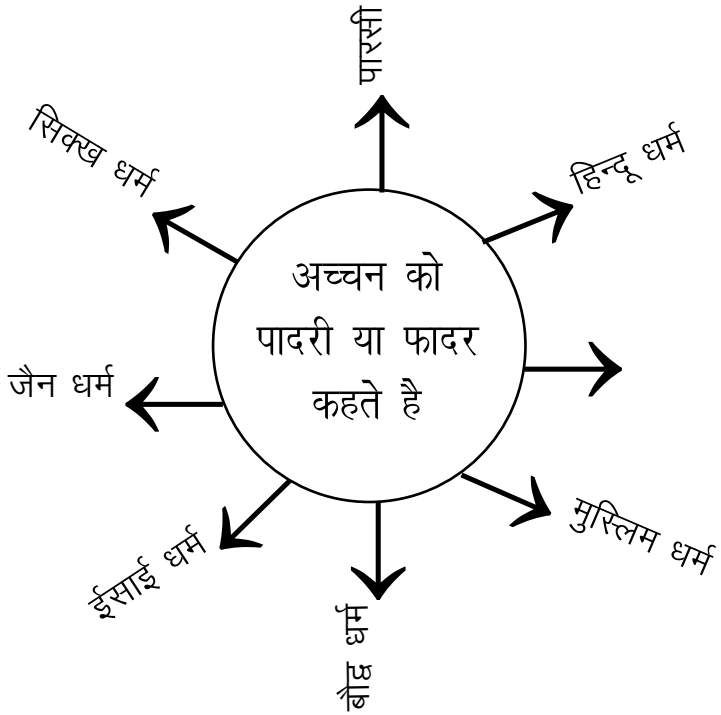

कथा कहती है कहानी?

कभी मेरा मन माँ की गोद, पिता के स्नेह, घर की सुरक्षा को तरसता। फिर कभी एक दम से चर्च, भगवान, पूजा– यही सच लगने लगता। क्या मैं एक अच्छा पादरी बन पाऊँगा?

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है। इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

कभी-कभी बचपन भी बहुत कठिन निर्णय मांगती है। घर-परिवार का सुरक्षित सुख, या फिर ईश्वर को जानने की तृष्णा? एक नौ साल के बालक के सामने ये कैसा चुनाव?